ऑडियो नंबर-**201** कम्पिला मु.**22.06.83** पृ.**2** मध्य से

ओम् शांति। कल प्रातः क्लास चल रहा था। बात चल रही थी, इस महाभारत लड़ाई में जो राजयोग सीखते थे उन्हों की फिर से राजधानी स्थापन हो गई। राजयोग सीखते थे उन्हों की राजधानी स्थापन हो गई। सीखने वाले कौन थे? ब्राह्मण, ब्रह्मा के बच्चे, डायरैक्ट बाप के। तुम जानते हो, अभी हम बाबा के पास जाएँगे। किसलिए? राजयोग सीखने। फिर राजयोग सीख नई दुनियाँ में आएँगे। फिर झाड़ वृद्धि को पाता जाएगा।

देवी-देवता धर्म जो था, वह इस समय प्रायः लोप है; पूरा लोप नहीं हो गया। कुछ-न-कुछ ऐसे परिवार अभी भी भारत में हैं, जो 100/50 लोगों का इकट्ठा मिल करके एक परिवार है, एक चूल्हे पर खाना बनता है और एक होता है उनका सरपरस्त। उसकी परमिशन के बगैर कोई काम नहीं होता। सब जैसे एक सूत्र में बँधे हुए हैं। एक मत, एक राज्य, एक धर्म, एक भाषा। तो देवी-देवता सनातन धर्म पूरा लोप नहीं होता।

तो बाप कहते हैं- मैं फिर से आकर आदि सनातन देवी-देवता धर्म की स्थापना करता हूँ। धर्म का नाम क्या पड़ता है? आदि सनातन देवी-देवता धर्म। आदि का है, मध्य में और-2 आ जाते हैं; और सनातन माना? सनातन माना ही पुराना। हर धर्म के धर्मपिता के नाम पर धर्म का नाम पड़ता है। तो आदि सनातन धर्म भी ज़रूर किसी के नाम पर पड़ा होगा, जिसने पुरुषार्थ किया होगा, बाप की मत पर ही पुरुषार्थ किया होगा। तो शास्त्रों में नाम है, ब्रह्मा का सबसे बड़ा पुत्र- योगीश्वर सनतकुमार। चार मानसी पुत्र पहले पैदा हुए, जो चार धर्मों के मुख्य बीज हैं। उनमें से मुख्य सनतकुमार, जिनके नाम पर 'सनातन देवी-देवता धर्म' नाम पड़ा।

भारत जो ऊँच-ते-ऊँच था, उनको अब ग्रहण लगा हुआ है। काम-चिता पर बैठने से इस समय सारी दुनियाँ काली हो गई है। सारी दुनिया में सब आ जाते हैं, जो बड़े-ते-बड़े धर्म-स्थापक हैं, वो भी आ जाते हैं। अब फिर तुम ज्ञान-चिता पर बैठ गौरे बनते हो। तुम जो श्याम बन गए थे। श्याम से गौरा, सुंदर बनाने वाला है परमपिता परमात्मा। क्या बनाता है? श्याम से सुंदर बनाता है। एक ही जन्म में बनाता है या एक जन्म में श्याम और अगले जन्म में सुंदर बनाता है? जब ईश्वरीय जन्मसिद्ध अधिकार है, तो जब ईश्वर से जन्म लिया, बच्चे के लिए ऐसे थोड़े ही कहा जाएगा कि अगले जन्म में जन्मसिद्ध अधिकार मिल जावेगा। इस जन्म में श्याम अर्थात् काले, पतित और इसी जन्म में सुंदर अर्थात् पावन बनना है; इसलिए 'श्यामसुंदर' नाम गाया हुआ है। ये एक नाम है, शब्द दो हैं, उनके अर्थ भी दो हैं। पहले वही शरीरधारी श्याम होता है, फिर सुंदर बनता है। एक शरीरधारी के दो नाम हैं। ऐसे नहीं कि इस जन्म में श्याम और अगले जन्म में सुंदर बनेगा। श्यामसुंदर किसको कहते हैं? कृष्ण को कहा जाता है। अब जो आत्मा सतयुग में कृष्ण बनेगी, संगमयुग में उसका पार्ट क्या हुआ? ब्रह्मा। दादा लेखराज ब्रह्मा, उन्होंने तो शरीर छोड़ दिया, सुंदर तो नहीं बने। भल उस शरीर से सुंदर नहीं बनते; लेकिन ब्रह्मा का पार्ट स्थापना के कार्य में अंत तक नूँधा हुआ है, ऐसा अव्यक्त वाणी (30.6.74 पृ.83 मध्य) में बताया। तो क्या साबित हुआ? कि वही ब्रह्मा की सोल ज़रूर कोई ब्राह्मण बच्चे में प्रवेश करती है, जो ब्राह्मण बच्चा पहले श्याम होता है, पतित होता है, जैसे और धर्मपिताएँ पतित होते हैं। है तो वो ब्राह्मण बच्चा भी ब्रह्मा का कुमार। माना? जो ज्ञान में बड़ा सो बड़ा ठहरा; इसलिए मुरली में बोला कि "जो ज्ञान में बड़ा है उनका रिगार्ड करना चाहिए। हम समझते हैं, वो ऊँच पद पाने वाला है।" (रात्रि क्लास 3.5.73 पृ.1 मध्य) तो ब्रह्मा का जो सबसे बड़ा पुत्र सनतकुमार गाया हुआ है, उस बड़े पुत्र में ही ब्रह्मा की सोल प्रवेश कर जाती है और वो 'योगीश्वर' के नाम से संसार में प्रसिद्ध होता है। अब योगियों का ईश्वर तो एक ही होगा, ऐसे नहीं कि योगियों का ईश्वर सनतकुमार भी अलग हो जाए, शंकर अलग हो जाए और कृष्ण अलग हो

जाए; क्योंकि कृष्ण को भी योगीश्वर कहते हैं। वास्तव में ये तीनों व्यक्तित्व शास्त्रों में अलग-2 नहीं हैं, एक ही व्यक्तित्व के अलग-2 रूपों में नाम दे दिए हैं। तो परमपिता परमात्मा है सुंदर बनाने वाला। उनकी श्रीमत मिलती है, जिस श्रीमत पर चलकर सुंदर बनते हैं। परमपिता परमात्मा की आत्मा तो एवरप्योर और गौरी है। आत्मा में ही खाद पड़ती है।

अभी तुम जानते हो, इस पुरानी दुनिया का विनाश होना है। सबका मौत है। फिर तुमको कहने वाला कोई नहीं रहेगा कि राम कहो, राम कहो। यह मौत ऐसा होता है, जो सब मरेंगे। अभी कितने मरेंगे? कितनी खाद मिल जाएगी। ऐटम बम्बों का विस्फोट होगा, चतुर्थ विश्वयुद्ध होगा, महाभारी महाभारत ग्रहयुद्ध, तृतीय विश्वयुद्ध के बाद तो सारी दुनियाँ डूब जाएगी, सिर्फ़ एक भारत-खण्ड बचेगा। और खण्ड न पहले थे, न अब रहेंगे। जैसे अमेरिका, 500 वर्ष पहले मनुष्य के मस्तिष्क पर इसकी कोई यादगार नहीं थी; ऑस्ट्रेलिया, 300 वर्ष पहले मनुष्यों की बुद्धि में कुछ भी नहीं था कि ऑस्ट्रेलिया भी है। जैसे-2 जनरेशन बढ़ती गई वैसे-2 महाद्वीप समुद्र से ऊपर आते गए। ये अलग-2 धर्म-खण्ड हैं, अलग-2 धर्मों से कनेक्टेड। ये धरणी है। धरणी को माता कहा जाता है। तो ये धरणी सब खण्डित धरणियाँ हैं, खण्डित धर्मों से कनेक्टेड- न वो पहले थीं और न अब रहेंगी। सिर्फ़ भारत-खण्ड ही बचेगा और भारत-खण्ड के चारों ओर समुद्र-ही-समुद्र होगा। जितने मरेंगे, उन सबकी खाद तैयार होगी, शरीरों की। मनुष्य ही नहीं, पशु, पक्षी, जानवर- सब मरेंगे। कितनी खाद मिल जाएगी! तो क्यों नहीं धरती फर्स्टक्लास फर्टाइल बन जाएगी, उपजाऊ बनेगी, अनाज देगी। सतयुग में सब हरी-भरी रहती है। हरियाली-ही-हरियाली हो जाएगी। सड़ी हुई चीज़ को खाद कहा जाता है। किचड़ा जल करके खाद बन जाता है। खाद बनने में भी टाइम लगता है। इस सृष्टि को भी नया बनने में टाइम लगेगा। तुम सूक्ष्मवतन में जाते हो। कितने बड़े-2 फल तुमको दिखाते हैं। सूबीरस पिलाते हैं। तुम विचार करो- कितनी खाद मिलेगी! सो भी खास कौन-से देश को मिलेगी? भारत देश को मिलेगी; क्योंकि दूसरे धर्मखण्ड तो समुद्र के अंतराल में समाय जाएँगे। वहाँ कितनी अच्छी-2 चीज़ें निकलेंगी। नई दुनिया के लिए सारी दुनिया में खाद पड़कर नई हो जाएगी।

सूक्ष्मवतन में वैकुण्ठ का सूबीरस तुमको पिलाते हैं। बगीचे आदि का साक्षात्कार कराते हैं। वहाँ हमारा बगीचा होगा। बच्चों ने साक्षात्कार किया है। सूबीरस पीकर आते थे। प्रिंस बगीचे से फल ले आते थे। अब सूक्ष्मवतन में तो बगीचा हो नहीं सकता। सूक्ष्मवतन है ही मन-बुद्धि की सूक्ष्म स्टेज। कोई ऐसे नहीं कि सूक्ष्मवतन कोई ऊपर की चीज़ है। सूक्ष्मवतन माना मन-बुद्धि में मनन-चिंतन-मंथन का जो प्रवाह चलता है सूक्ष्म, नई दुनिया की जो प्लैनिंग चलती है और जो भी सूक्ष्म-ते-सूक्ष्म संकल्प हैं; नई दुनिया जैसे कैसी होगी, क्या होगी अथवा सर्विस के संकल्प हैं, तो ऐसे संकल्प जिस समय चलते हैं तो जैसे कि वो आत्मा सूक्ष्मवतनवासी है। वास्तव में, मुरलियों में सूक्ष्मवतन को कई जगह उड़ाय दिया है। "सूक्ष्मवतन क्या है? कुछ भी नहीं। सूक्ष्मवतन जैसे 40 वर्ष के लिए रचते हैं।" तो ये मन-बुद्धि की स्टेज है, बाकी कोई सूक्ष्मवतन नहीं होता। जैसा कि बच्चों को अव्यक्त वाणी में ऑर्डर दिया है- "बच्चे, साकारी, आकारी और निराकारी होने की घड़ी-2 में प्रैक्टिस करो। अभी-2 साकारी, अभी-2 आकारी, अभी-2 निराकारी।" तो साकारी माना देह और देह के सम्बंधों की दुनिया की याददाश्त, आकारी माना सूक्ष्म मनन-चिंतन हो बुद्धि में- ज्ञान की बातों का, नई दुनिया का, सर्विस का, तो वो हुआ सूक्ष्मवतन और निराकारी दुनिया कौन-सी है? मन-बुद्धि की वो स्टेज, जिसमें निराकारी स्टेज बने माना निःसंकल्पी स्टेज बने, मनन-चिंतन-मंथन भी नहीं, मैं आत्मा बिंदु और मेरा बाप ज्योतिबिंदु, बस! और कुछ भी याद न रहे। तो वो है निराकारी स्टेज, जैसे कि निराकारी दुनिया में बैठे हुए हैं; इसलिए मुरली में बोला था कि "तुम बच्चे परमधाम को भी इस सृष्टि पर उतार लेंगे।" तो सूक्ष्मवतन में तो कोई बगीचा आदि हो नहीं सकता, ज़रूर बच्चे वैकुण्ठ में गए होंगे साक्षात्कार के लिए। एक-2 को साक्षात्कार नहीं कराएँगे। जो निमित्त बनते हैं उनको कराते हैं। हो सकता है अगर तुम याद में रहेंगे, बाबा

के बच्चे होकर रहेंगे, तो पिछाड़ी में तुमको बहुत साक्षात्कार होंगे। पिछाड़ी में तुम बाबा के होकर रहेंगे, तो तुमको बहुत साक्षात्कार होंगे। पिछाड़ी में कौन-से साक्षात्कार और अगाड़ी में कौन-से साक्षात्कार? आगे तो सिर्फ़ भक्ति का ही ज्ञान था, भक्ति का फाउंडेशन था, तो बंद आँखों के साक्षात्कार थे। अब अंत में तो ज्ञान सारा क्लीयर हो गया, 5000 वर्ष का सारा चक्र बाप ने क्लीयर कर दिया, तो अंत में साक्षात्कार होंगे बुद्धि के। कौन-सा साक्षात्कार ज़्यादा पावरफुल होता है? उस बंद आँखों के साक्षात्कार के लिए तो बताया, बहुत-से साक्षात्कार करने वाले चले गए; क्योंकि बुद्धि का भोजन ग्रहण नहीं किया। साक्षात्कार तो भक्तों को होते हैं; जो ज्ञानी तू आत्मा मुझे विशेष प्रिय है, वो ज्ञानी तू आत्माएँ बुद्धि से हर बात की गहराई को समझती हैं; इसलिए बताया कि पिछाड़ी में तुमको बहुत साक्षात्कार होंगे। जो पूरे सरेंडर होंगे, उनको होंगे। क्या? बाप के पूरे-2 बन चुके होंगे, जैसे बाप चलाए वैसे चलेंगे, उनको अपने अनेक जन्मों का साक्षात्कार होगा बुद्धि से। यह तो पहले भट्ठी बननी थी। भट्ठी में पकना था तो बहुत आ गए।

बच्चों को समझाया है- सिर्फ़ कोई को लिट्रेचर देने से समझ नहीं सकेंगे। क्या कहा? कागज़ के पत्ते छपाय लिए और सोचा कि हम सर्विस करने जाएँ और लिट्रेचर बाँट दिया, तो किसी की बुद्धि में कुछ बैठेगा नहीं। ये ज्ञान ऐसा नहीं है जो किताबों में बाँध करके रख दिया जाए। ये तो पहले समझाना पडे रूबरू। समझाने वाला टीचर ज़रूर चाहिए। टीचर सेकेण्ड में समझाएगा। यह तुम्हारा बाबा है। पहली बात क्या समझानी है? यह तुम्हारा बाबा है, यह तुम्हारा दादा है। लिट्रेचर में चित्र बना हुआ हो त्रिमूर्ति का। त्रिमूर्ति के चित्र में बाबा की ओर इशारा करो और दादा की ओर इशारा करो। बाबा किसे कहा जाता है और दादा किसे कहा जाता है? बाबा कहा जाता है ग्रैण्ड फादर को और दादा कहा जाता है बड़े भाई को। तो त्रिमूर्ति के चित्र में बाबा कौन हुआ और दादा कौन हुआ? हाँ, दादा हुआ ब्रह्मा, बड़ा बच्चा। किसका बड़ा बच्चा? शिव बाप का बड़ा बच्चा? आत्मिक रूप में तो है बच्चा; लेकिन उससे भी बड़ा कोई बच्चा है आत्मिक रूप में। क्योंकि कृष्ण की सोल तो सतयुग में जाकर जन्म लेगी अपने चोले से। उसको भी जन्म देने वाला कोई रचयिता बाप होगा, जो उससे भी पहले होता है और डायरैक्ट शिव बाप से विश्व की बादशाही लेता है। तो बाप उससे भी बड़ा हो गया, जो राजयोग सीख करके विश्व का बादशाह बनता, 'हर-हर महादेव शम्भो काशी विश्वनाथ गंगे'। विश्वनाथ का टाइटिल सिर्फ राजयोग के द्वारा ही मिलता है। बड़े-2 हिटलर, नेपोलियन, मुसोलिनी हुए, बाहुबल से विश्व के ऊपर राजाई नहीं कर सके। तो ऐसा राजयोग सीखने वाला जो सब मनुष्य-आत्माओं का पिता है, जिसको कहते हैं- प्रजापिता, सारी प्रजा का पिता। कितनी प्रजा है? 500/600 करोड़ मनुष्य, सबका बाप, जिसकी मान्यता हर धर्म में है। मुसलमानों में कहते हैं 'आदम' और अंग्रेज़ों में कहते हैं 'ऐडम', जैनियों में कहते हैं 'आदिदेव, आदिनाथ'। हिन्दुओं में भी कहते हैं 'आदीश्वर', त्वमादिदेवः पुरुषः पुराणः (गीता 11/38)- वंदना करते हैं। तो वो हुआ बाबा, बापों का भी बाप, सब धर्मपिताओं का भी बाप; इसलिए हर धर्म में ऐडम-ईव की मान्यता है। तो वो हुआ बाबा और उसका सबसे बड़ा बच्चा मनुष्य-सृष्टि में हुआ ब्रह्मा माना कृष्ण की सोल। तो ये है तुम्हारा बाबा, ये है दादा।

यह बेहद का बाप स्वर्ग का रचयिता है। देखो बाबा, दादा और फिर यहाँ बाप। न बाबा स्वर्ग का रचयिता है; क्योंकि मुरली में डेफिनेशन दी, बाबा किसे कहा जाता है? "साकार और निराकार के मेल को बाबा कहा जाता है" (मु.9.3.89 पृ.1 मध्य); नहीं तो बिंदु-2 आत्माओं का वो बाप है शिव। उसको बाबा नहीं कहेंगे, दूसरे सम्बंध नहीं बन सकते बिंदु-2 आत्माओं के। वो सिर्फ़ बाप है और हम सब आपस में भाई-2 हैं, भाई-बहन भी नहीं। आत्मिक रूप में भाई-बहन नहीं होते। तो ज्योति बिंदु-2 आत्माओं का बाप शिव। वही शिव जब साकार शरीर में प्रवेश करता है तो अनेक प्रकार के सम्बंध बनते हैं और उन

सम्बंधों में सबसे पहला सम्बंध हम बच्चों के साथ जुटता है 'बाबा', साकार शरीर के द्वारा। तो वो साकार शरीर के द्वारा हुआ 'बाबा' और जिसने पहले-2 उस (आत्माओं के) बाप का वर्सा लिया; क्योंकि ब्रह्मा को साक्षात्कार हुए थे, साक्षात्कार का मतलब ये नहीं कि उसमें बाप ने प्रवेश कर लिया! उन साक्षात्कारों के रहस्य को वो नहीं समझ सके, गुरू से पूछा, वाराणसी में विद्वानों-आचार्यों से पूछा, नहीं संतुष्टि हुई तो पूर्वी बंगाल में जाना पड़ा। पूर्वी बंगाल में उनके जीवन के अनुभव के आधार पर सच्चा और साफ और विद्वान और होशियार व्यक्ति जो था, उससे जाकर उन्होंने कनेक्शन जोड़ा। उसी समय परमात्मा शिव ने उस भागीदार में (प्रवेश किया), जो उनका कलकत्ते में भागीदार था, जिसको उन्होंने सारी दुकान सौंपी हुई थी, उससे कनेक्शन जोड़कर अपने साक्षात्कारों को क्लीयर किया। तो जो क्लैरिफिकेशन मिला, उसको ब्रह्मा ने जितनी गहराई से समझा उतना और किसी ने उतनी गहराई से नहीं समझा। क्यों? क्योंकि साक्षात्कार किसको हुए थे? ब्रह्मा को साक्षात्कार हुए, किसी दीगर मनुष्य को इतने साक्षात्कार नहीं हुए थे; लेकिन ब्रह्मा कहो या कृष्ण बच्चा कहो, वो बच्चा डायरैक्ट बाप से पैदा नहीं होता कभी। बीच में कौन होता है? माता गुरू बिगर उद्धार नहीं हो सकता। तो ज़रूर कोई बीच में माता थी, जो मुरलियों में आता है- "ऐसे-2 बच्चे थे, ऐसी-2 बच्चियाँ थीं, जो मम्मा-बाबा को भी डायरेक्शन देती थीं।" (मु. 28.5.69 पृ.2 अंत, 8.7.78 पृ.1 अंत) मम्मा-बाबा माना? ओमराधे सरस्वती और दादा लेखराज ब्रह्मा। उनको भी डायरेक्शन देने वाली ऐसी सशक्त आत्माएँ यज्ञ के आदि में थीं माना मम्मा-बाबा उनके ऊपर कंट्रोल नहीं कर सकते थे; वो मम्मा-बाबा के ऊपर कंट्रोल करती थीं। तो जो आदि में हुआ सो अंत में भी होता। वही आदि वाली आत्माएँ शरीर छोड़ जाती हैं, तो फिर दुबारा जन्म ले करके आती हैं, ब्राह्मण जन्म के संस्कार लेकर आती हैं और फिर यज्ञ को कंट्रोल करती हैं। तो बताया कि बाप स्वर्ग का रचयिता है माना बिंदु-2 आत्माओं का जो बाप है, वो है स्वर्ग का रचयिता, वो है आत्माओं का बाप। बाबा या दादा माना शरीरधारी कोई रचयिता नहीं है।

सिर्फ़ कोई को लिट्रेचर दे दिया, तो वो देख करके फेंक देंगे। ये बाबा और दादा और बाप और मात-पिता- इनका अर्थ कोई समझ नहीं सकेगा, जब तक उसको बैठकर समझाएँगे नहीं। किसी को लिट्रेचर देने मात्र से कोई समझेंगे नहीं। इतना ज़रूर समझाना है- बाप आया हुआ है। क्या? ऐसे कहीं नहीं बोला कि बाप आया हुआ था, आ करके फिर चला गया। अगर बाप आया हुआ था, आ करके चला गया, हमको समझाय गया, अब तुम हमसे समझो, तो कोई इण्टरेस्टेड नहीं होगा। क्यों? क्योंकि सारी दुनिया उस गॉडफादर को याद करती है, सारी दुनिया के मनुष्यमात्र ने उस बाप से वर्सा लिया है नम्बरवार; इसलिए मुरली में बोला है- "गॉडफादर कहते हैं तो ज़रूर फादर मिलना चाहिए। फादर सिर्फ़ कहें और कभी मिले नहीं, वो फादर कैसे हो सकता? सारी दुनियाँ की जो भी आत्माएँ हैं, सबसे आ करके मिलते हैं।" (मु.8.7.74 पृ.1 मध्य) तब उनका गायन होता- 'हैविनली गॉडफादर', जो हैविन की स्थापना करके जाते हैं। अंग्रेज़ लोग भी ये अनुभव करते हैं कि हैविन है इस वर्ल्ड में। कब अनुभव करते हैं? कहते हैं- क्राइस्ट से 3000 वर्ष पहले भारत में पैराडाइज़ था। तो क्राइस्ट को 2000 साल होने जा रहे हैं और 3000 वर्ष पहले, तो कौन-सा टाइम हुआ? 3000 वर्ष के अंदर नहीं, क्राइस्ट से 3000 वर्ष के पहले। ज़रूर संगमयुग हुआ; जबकि दुनिया का विनाश नहीं हो पाता, नज़दीक होता है; लेकिन होता नहीं है। उस समय क्रिश्चियन्स भी मौजूद होते हैं, मुसलमान भी मौजूद होते हैं। तो वो क्रिश्चियन्स अनुभव करते हैं पैराडाइज़ का, मुसलमान लोग भी अनुभव करते हैं जन्नत का। तो ऐसे पीरियड की बात है कि दुनिया की हर मनुष्यमात्र के सामने वो गॉडफादर प्रत्यक्ष होता है। हाँ, मिलने की विधि सबकी अलग-2 है। ऐसे नहीं कि सारे ही क्लोज-कॉण्टेक्ट में आ करके मिल लेंगे। कोई तो सब इन्द्रियों से परमात्मा बाप के साथ पूरा मिलन मनाते हैं और कोई सिर्फ़ आँख से देखेंगे- नज़दीक या दूर से, कान से आवाज़ भी सुनेंगे; लेकिन क्लोज-कॉण्टेक्ट में नहीं आ सकेंगे। कोई अख़बार में चित्र देख करके और उनके

प्रवचन पढ़ करके मिल लेंगे और संतुष्ट हो जाएँगे, कोई टेलिविज़न में देख करके, मिल करके संतुष्ट हो जाएँगे और अपने अंदर निश्चय पैदा कर लेंगे कि हाँ, यही बाप है, यही बाप आया हुआ है। तो कहने का मतलब मिलने की गति भले अलग-2 हो, विधि अलग-2 हो; लेकिन सारी दुनियाँ का एक भी ऐसा मनुष्यमात्र नहीं होगा जो उस परमात्मा बाप से मिलन-मेला न मनाए मन-बुद्धि से, अपना न समझे उसे। तो इतना ज़रूर समझाना है कि बाप आया हुआ है, चला नहीं गया। यह ढिंढोरा पिटवाना है। तुम्हारा ये फ़र्ज़ है कि सबको बाप का परिचय दो।

बरोबर यादव, कौरव, पाण्डव भी थे। कब? जब बाप आया हुआ था, तो बच्चे सब एक जैसे नहीं थे उस बाप को पहचानने वाले, यादव भी थे, कौरव भी थे, पाण्डव भी थे। पाण्डव किन्हें कहा जाता है? पाण्डव कहा जाता है जो बाप को जानते भी हैं, मानते भी हैं और उसके बताए हुए रास्ते पर चलते भी हैं; कौरव उन्हें कहा जाता है जो बाप को जानते तो हैं; लेकिन मानते नहीं हैं, तो चलने का सवाल ही नहीं और यादव वो जो अपने अहंकार में आ करके न तो बाप को जानना चाहते, फिर मानने और चलने की तो बात ही नहीं। तो तीनों प्रकार की सेनाएँ इस सृष्टि पर मौजूद होती हैं जब बाप आते हैं; लेकिन अंत में ये स्थिति होती है, इस दुनिया का कोई भी मनुष्यमात्र या मनुष्य-आत्मा ऐसी नहीं बचती जो उस बाप को गॉडफादर के रूप में स्वीकार न कर ले। दुनियाँ का नास्तिक से नास्तिक होगा, जब अंत समय आएगा, कयामत का कहर ढहेगा तो हर मनुष्य-आत्मा मानेगी ज़रूर। गॉड को माने बिगर इस सृष्टि से वापस कोई नहीं जा सकता।

तो ज़रूर राजयोग सिखाने वाला होगा, ज़रूर स्वर्ग की स्थापना भी होगी। कोई मनुष्य स्वर्ग की स्थापना नहीं कर सकता, सिवाय परमपिता परमात्मा के। एक धर्म की स्थापना और अनेक धर्मों का विनाश होगा। धर्म की स्थापना कोई बड़ी बात नहीं, ये तो सभी धर्मपिताओं ने आ करके अपने-2 धर्म स्थापन किए; लेकिन पुरानेपन का विनाश किसी ने नहीं किया। पुरानी धारणाओं का विनाश, पुरानी मान्यताओं का विनाश, पुरानी परम्पराओं का विनाश कोई नहीं कर सका; क्योंकि इसके लिए तो मुकाबला करना पड़ता है, जनरेशन का सामना करना पड़ता है और ये सामना करने की शक्ति सिवाय बाप के और किसी में नहीं है। तो वो बाप आता है, सब धर्मों का विनाश करता है। सब जो अनेक प्रकार के राज्य हैं, राज्याधीश हैं, अपनी-2 मत अलग-2 चलाए रहे हैं, उनका सबका खण्डन कर देता है। तो अनेक धर्मों का विनाश होगा; एक राजधानी स्थापन होगी।

तुम जानते हो, हम ही नर से नारायण और नारी से लक्ष्मी बनेंगे। क्या बनेंगे? नर से नारायण बनेंगे; ऐसे नहीं है कि नर से प्रिंस बनेंगे। नर से प्रिंस नहीं बनेंगे, नर से प्रिंस तो वो बनेंगे जो शरीर छोड़ देंगे। जैसे ब्रह्मा-सरस्वती ने शरीर छोड़ा तो क्या बनेंगे? नर से प्रिंस बनेंगे, नारी से प्रिंसेज बनेंगे; लेकिन भारत की परम्परा में इसका गायन नहीं है। क्या गायन है? नर अर्जुन को ऐसा ज्ञान मिला, जिससे नर से वो नारायण बना, नारी से लक्ष्मी बनी। यह है तुम्हारी एम-ऑब्जेक्ट। और स्कूल-कॉलेजों में एम-ऑब्जेक्ट नहीं होती।

नर से नारायण और नारी से लक्ष्मी तुम बनते हो। तुम्हारी एम-ऑब्जेक्ट है; क्योंकि स्कूल में एम-ऑब्जेक्ट होती है- डॉक्टरी की पढ़ाई पढ़ेंगे, तो ज़िंदगी का लक्ष्य है- सर्जन बनेंगे, डॉक्टर बनेंगे; वकालत की पढ़ाई होती है तो एम-ऑब्जेक्ट होता है कि जीवन में वकील बनेंगे, एडवोकेट बनेंगे, जज बनेंगे, तो वो प्रैक्टिकल होता है। यहाँ भी बाप की पढ़ाई प्रैक्टिकल है। ऐसे नहीं है कि सारे जीवन पढ़ते रहेंगे राजयोग की शिक्षा और अगले जन्म में जा करके हम राजा बनेंगे। नहीं। बाप हमको सिर्फ़ तसल्ली नहीं देते हैं झूठी, प्रैक्टिकल पढ़ाई है। इसमें जो जितना-जैसी पढ़ाई पढ़ेगा उतना राजा ज़रूर बनेगा। हाँ, पहले कर्मेंद्रियों के ऊपर कण्ट्रोलर बनना है, फिर उसके बाद विश्व का बादशाह भी बनना है। विश्व का बादशाह बनाने की

पढ़ाई सिवाय परमपिता परमात्मा के और कोई नहीं पढ़ाय सकता। मनुष्य से देवता किये करत न लागी वार- ये जो गायन है, ब्रहमा को विष्णु बनने में कितना टाइम लगता है? एक सेकेण्ड। तो ये इतने वर्ष किस खाते में गए? ज़रूर ब्रहमा की सोल भी ज्ञान की दृष्टि से अपने बाप को पहचान नहीं पाती, पूरा निश्चय नहीं धारण कर पाती। अगर पक्का निश्चय हो जाए कि ये वर्सा देने वाला ये मेरा बाप है, तो वो अंतिम क्षण आ जाए, जो ब्रहमा से विष्णु बना देता है। एक ही सितारा है जो अपनी जगह पर निश्चय बुद्धि हो करके, अटल, अखण्ड और अपने स्थान को नहीं छोड़ता, चक्कर नहीं काटता किसी मनुष्यमात्र के, वही प्रजापिता है और बाकी जितने भी सितारे हैं चाँद-सितारे, वो सब चक्र काटने वाले हैं, सब चक्र फेरी में आ जाते हैं, परमात्मा के स्वरूप को निश्चयात्मक बुद्धि से नम्बरवार पहचान पाते हैं।

देवता सिर्फ़ सूर्यवंशी को कहा जाता है, चंद्रवंशियों को देवता नहीं कहा जाता। फिर इस्लामियों, बौद्धियों और क्रिश्चियन्स की तो बात ही नहीं। जो सूर्य के वंशी हैं वही सूर्यवंशी हैं; क्योंकि कोई भी वंश शुरू होता है तो किसी राजा का नाम एड करते हैं, जिसके नाम पर, जिस व्यक्तित्व के द्वारा वो वंश शुरू होता है। रघुवंश, तो ज़रूर 'रघु' नाम का कोई राजा हुआ, सूर्यवंश तो ज़रूर 'सूर्य' नाम का कोई हुआ। जैसे भक्तिमार्ग की गीता में लिखा हुआ है कि ये ज्ञान सबसे पहले मैंने सूर्य को दिया। सूर्य देवताय नमः, चंद्र देवताय नमः। तो सूर्य और चंद्र क्या हुए? ज़रूर देवात्माएँ बनने वाली हैं आत्माएँ। तो 'ज्ञान-सूर्य प्रगटा, अज्ञान अंधेर विनाश', प्रगट ज़रूर होता है। प्रगट होने की भी यादगार और अस्त होने की भी यादगार यहीं संगमयुग में होती है। अस्त होने की यादगार कहाँ है? सन सेट प्वॉइंट माउण्ट आबू में और पूरब में सूर्य उगता है, जैसे अव्यक्त वाणी में बोला- "इस रथ को कहाँ से पकड़ा? पूर्वी बंगाल से।" (अ.वा.1.2.79 पृ.259 आदि) तो सूर्यवंश सिर्फ़ देवताओं को कहा जाता है। वही पक्के देवी-देवताएँ हैं, जो डायरैक्ट ज्ञान-सूर्य की संतान बनते हैं। क्या? डायरैक्ट ज्ञान-सूर्य की संतान। समझो, सतयुग का सेकेण्ड नारायण है, जो कृष्ण का बच्चा बनेगा। कितनी कला का होगा? पौने सोलह कला। तो वो डायरैक्ट ज्ञान-सूर्य की संतान होगा क्या? सोलह कला सम्पूर्ण, सर्वगुण सम्पन्न- ये है टाइटिल देवताओं का। ऐसे नहीं कहा, पौने सोलह कला सम्पन्न। उनको पक्का देवता नहीं कहा जाता। क्यों? क्योंकि वो आत्माएँ जो यहाँ डायरैक्ट बाप की मत पर नहीं चल पातीं, दूसरे मनुष्यों का पल्ला पकड़ लेती हैं, बाप को नहीं पहचान पातीं, वही आत्माएँ द्वापरयुग से फिर दूसरे धर्मों में जा करके कन्वर्ट हो जाएँगी, दूसरे धर्मों का फाउण्डेशन लगाने के निमित्त बनेंगी, भारत को धोखा देंगी। वो पक्के देवी-देवताएँ नहीं हो सकते; इसलिए भारतीय परम्परा में पहले नारायण की पूजा होती है; बाकी सतयुग के सात नारायणों की कहीं पूजा, कहीं मंदिर, कहीं मूर्तियाँ नहीं मिलती हैं। तो क्या साबित होता है? सप्तऋषियों के रूप में उनका गायन तो है; लेकिन ऋषि-मुनि-महर्षियों का कहीं भी मंदिर बना करके पूजा नहीं की जाती; क्योंकि वो सब हैं हठयोगी, अपनी हठ पर अड़ जाते हैं; परमात्मा बाप की मत पर नहीं चलते; इसलिए बाप को फिर पहचान भी नहीं पाते। तो सूर्यवंशी कहा जाता है देवताओं को और चंद्रवंशी को क्षत्रिय कहा जाता है। चंद्र माना? ज़रूर ज्ञान चंद्रमा के रूप में शीतल पार्ट बजाने वाला भी कोई हुआ होगा, जिस शीतल पार्ट बजाने वाले की रहबरी में, गोद में कीड़े-मकोड़े भी पले होंगे, काँटे जैसी दुःख देने वाली आत्माओं ने भी पालना ली होगी; क्योंकि चंद्रमा सबको शीतलता देता है। चंद्रमा स्वयं प्रकाशित नहीं होता है; वो सूर्य से प्रकाश लेता है। तो चंद्रमा है शीतल। अपने ब्राहमणों की संगमयुगी दुनिया में ज्ञान-चंद्रमा की शूटिंग करने वाला कौन? ब्रहमा। एक भी ब्रहमाकुमार-कुमारी उस समय का ऐसा नहीं होगा, जो ये कहे कि ब्रहमा बाबा ने हमको कभी दृष्टि से, वृत्ति से, वाचा से, कर्मेन्द्रिय से दुःख दिया। एक भी ब्रहमाकुमार गारंटी से नहीं होगा। (इससे) क्या साबित हुआ? कि सहनशीलता की प्रतिमूर्ति थी, माँ का पार्ट था। माँ कैसे भी बच्चे होते हैं- अंधे, लूले, लंगड़े, कोढ़े, काने, कूतरे, चोर, डकैत, लुच्चे, लफंगे और सब बच्चों को अपनी गोद में आश्रय ज़रूर देती है; किसी बच्चे को अपनी गोद से कभी

अलग नहीं करना चाहती। तो वो ज्ञान-चंद्रमा हुआ। उस ज्ञान-चंद्रमा की आज्ञाओं को जो फॉलो करने वाले बने; लेकिन बाप की आज्ञाओं को फॉलो नहीं कर सके, वो फिर कहे जाते हैं- चंद्रवंशी और जितने भी बाद वाले सतयुग के सात नारायण हैं, वो सब उस ज्ञान-चंद्रमा से पालना लेते हैं; क्योंकि वो सब दुःखदायी धर्मों में कन्वर्ट होने वाली आत्माएँ हैं, कम कलाओं के नारायण बनने वाली आत्माएँ हैं, पूरी पढ़ाई बाप से डायरैक्ट/सम्मुख बैठकर नहीं पढ़ सकतीं; क्योंकि उनमें झूठापन भरा हुआ है 63 जन्मों का; इसलिए उनमें कच्चापन रह जाता है। तो ज्ञान-सूर्य के सम्मुख नहीं रह सकतीं वो; लेकिन ज्ञान-चंद्रमा की गोद में पलती हैं। तो जो सात नारायण हैं, कच्चे कन्वर्ट होने वाले, वो सारे ही जैसे कि चंद्रवंशी हो गए, ठंडी औलाद। ज्ञान-सूर्य के बच्चे वही बनते हैं जो डायरैक्ट ज्ञान-सूर्य से इसी जन्म में, इसी शरीर से प्राप्ति कर लेते हैं राजयोग की। तो चंद्रवंशी को क्षत्रिय कहा जाता है। क्षत्रिय माना? (किसी ने कहा-छत्रधारी) छत्रधारी तो होता है; लेकिन तीर-कमान ले करके खड़ा रहता है (मत)लब माया का वार कभी भी हो सकता है, अभी माया के ऊपर विजय नहीं पाई है। कृष्ण को दिखाते हैं चैन की बंशी बजाते हुए, आराम से बैठे हुए। तो कृष्ण कौन हुआ- चंद्रवंशी हुआ या सूर्यवंशी हुआ? (किसी ने कुछ कहा-...) नहीं, सतयुग का कृष्ण, किसका बच्चा होगा? ज्ञान-सूर्य का बच्चा होगा। चैन से, आराम से बैठ करके बंशी बजाएगा।

कोई कहे कि प्रजापिता जिसको कहते राम वाली आत्मा, जिसके लिए मुरली में बोला- "राम बाप को कहा जाता है।" (मु.6.9.70 पृ.3 मध्य) ऐसे तो कभी बोला नहीं- "राम कृष्ण को कहा जाता है या बाप कृष्ण को कहा जाता है।" तो वो राम वाली आत्मा भी तो यज्ञ के आदि में फेल हो गई। अरे! आदि में फेल कोई हो जाए, तो क्या ज़रूरी है कि वो अंत में भी फेल हो जाएगा? (बल्कि) आदि में तो वो फाइनल परीक्षा ही नहीं हुई थी। फाइनल रिज़ल्ट कब निकलता है, आदि में निकलता है क्या? वो तो निकलता है अंत में। तो आदि में फेल होने वाला क्या अंत में पास नहीं हो सकता? पास भी हो सकता है और फिर माया तो किसी को नहीं छोड़ती ऐसे तो। ऐसा घमण्ड कोई न करे कि हमने माया के ऊपर जीत पा ली है। माया सबको फथकाती है। हाँ, कोई पहले फेल हो जाते हैं और कोई मध्य में और कोई बाद में फेल होते। तो फायदे में कौन रहेंगे? जो पहले फेल हो गए, पहले अनुभवी बने, वो तो पहले अनुभवी बनने के कारण आगे भी जा सकते हैं। बताया, पहले तो देवता बनना चाहिए; क्योंकि जो देवताएँ बनते हैं सतयुग में, वो सब त्रेता में जाके क्या बनते हैं? क्षत्रिय। माना माया किसी को नहीं छोड़ती। जो ऊँचा उठता है, वो फिर धीरे-2 देवता से क्षत्रिय, क्षत्रिय से वैश्य, वैश्य से शूद्र बनता ही है। नापास होने से क्षत्रिय बन जाते हैं।

तो बाप कहते हैं- मीठे सिकीलधे बच्चे, कितने ढेर सिकीलधे बच्चे हो। किसका बच्चा गुम हो जाता है और 5/6 मास बाद आ करके मिलता है तो कितना प्यार से, कितना सिक से आ करके मिलेगा; इसलिए कहते हैं- सिकीलधे बच्चे। तो कौन हुए सिकीलधे बच्चे? ज़रूर जो यज्ञ के आदि में बिछुड़ गए थे, गुम हो गए थे, उन्हीं बच्चों के लिए क्या कहा? सिकीलधे बच्चे। लाड़ले बच्चे, तुम बिछुड़ गए थे, अब फिर आ करके मिले हो, बेहद का वर्सा लेने के लिए।

डीटी वर्ल्ड सॉवरण्टी इज़ योर गॉड फादरली बर्थराइट। क्या? जन्मसिद्ध अधिकार है। क्या? देवताई राजाई प्राप्त करना। किससे जन्म लेने वाले हो? ईश्वर से जन्म लेने वाले हो। तो देवताई जन्मसिद्ध अधिकार किससे मिलेगा? ईश्वर से मिलेगा। अगले जन्म में तो देवताओं से प्राप्ति होगी; लेकिन तुमको किससे प्राप्ति होनी है? डायरैक्ट गॉड फादरली बाप से, हैविनली गॉडफादर जिसको कहा जाता है, जो स्वयं हैविन की स्थापना करने वाला है।

बाबा तुमको बेहद की बादशाही देने आया है। तुमको माना? 'तुम' किससे कहा जाता है? जो सम्मुख बैठते हैं उनसे कहा जाता है 'तुम'। कहते हैं- तुम बच्चों के लिए कितनी बड़ी सौगात लाई है; परंतु फिर इतना लायक भी बनना है, श्रीमत पर चलना है। बाबा-मम्मा कह करके फिर अगर भूल गए या फारकती दे दी तो फिर गले का हार नहीं बन सकेंगे। क्या? जो संगमयुगी स्वर्ग का फर्स्ट जन्म है, 21 जन्मों की बादशाही में से पहला जन्म- त्रेता के 12 जन्म, सतयुग के 8 जन्म और 1 जन्म संगमयुग का स्वर्गीय जन्म; अभी नहीं कहेंगे, अभी कोई ल.ना. की राजधानी नहीं स्थापन हो गई, कोई राम का राज्य स्थापन नहीं हो गया; लेकिन होने वाला है। तो जो संगमयुगी श्रेष्ठ-ते-श्रेष्ठ जन्म की प्रारब्ध है 21 जन्मों में से पहले जन्म की, उस प्रारब्ध को पाने वाले यथा राजा तथा प्रजा वर्ग की कितनी आत्माएँ होंगी, जो बाप के गले का हार बनती हैं, संसार में वो हार गाया जाता है? (किसी ने कहा- नौलखा हार) नौलखा हार गाया जाता है। नौ लाख सितारे आसमान में गाए हुए हैं, जो सितारे निराधार चमकते हैं माने सिवाय परमात्म-ज्ञान के और कोई उनका आधार नहीं होता, कोई साकारी मनुष्य उनका आधार नहीं होता; अगर आधार बनता भी है तो निराकारी स्टेज में रहने वाला परमपिता परमात्मा ही उनका आधार बनता और वो कोई आधार नहीं है, साकार में तो आधार नहीं है। हाँ, ज्ञान की दृष्टि से आधार है। तो तुम बच्चे ही गले का हार बनेंगे; अगर भूल गए तो गले का हार नहीं बनेंगे, वो तो फेल हो गए। तो नौ लाख आत्माओं की ये सिफ्त है कि वो सारी आत्माएँ सतयुग की जो दूसरी डिनायस्टीज़ की प्रजा होगी या त्रेता की डिनायस्टीज़ की जो प्रजा होगी, उसके मुकाबले इनकी विशेषता होगी- वो सब ज्ञानी तू आत्माएँ होंगी।

बच्चों को कितना प्यार किया जाता है। कौन-से बच्चों को? बाप के बच्चे कौन-से हैं? जो सम्मुख बैठ सुनते हैं और ऐसे सुनने वाले जो बाप को एक बार पहचानने के बाद फिर कभी छोड़ते नहीं हैं और दूसरी बात, पूरे 84 (जन्मों) का ऑलराउण्ड पार्ट लगाने वाले हैं, ऑलराउण्ड पार्ट बजाने वाले हैं। तो ऐसे आत्मिक स्टेज पाने वाले बच्चों को कितना प्यार किया जाता। बाप किसको सुनाते हैं? तुम रूहों को सुनाते हैं माना आत्मिक स्टेज में रहने वालों को सुनाते हैं। देह-अभिमानियों को बाप पढ़ाई नहीं (पढ़ाते), भल यहाँ सामने बैठे होंगे; लेकिन अगर देहभान की स्टेज में होंगे तो बाप की नॉलेज उनके गले नहीं उतरेगी। अंदर से कुछ और और बाहर से कुछ और होंगे। बाहर से तो कुछ बोल नहीं सकते; क्योंकि सच्चाई का तो मुकाबला कर भी नहीं सकते। तो बच्चों को कितना प्यार किया जाता है, बाप बच्चों को सिर पर रखते हैं। कैसे बच्चों को सिर पर रखते हैं? जो सर्विसेबुल बच्चे हैं उनको सिर पर रखते हैं। जैसे चंद्रमा को कहाँ रखा हुआ है? सर पर रखा हुआ है। कौन है चंद्रमा? ज्ञान-चंद्रमा ब्रह्मा और गंगा को सर पर रखा हुआ है, ज्ञान की गंगाएँ जो सर्विसेबुल हैं। सर्विसेबुल बच्चों को बाप दूर बैठे भी याद करते रहते हैं। सारी दुनियाँ बाप को याद करती और बाप किसको याद करते? सर्विसेबुल बच्चों को याद करते हैं। डिससर्विस करने वालों को याद करेंगे क्या?

बेहद के बाप के कितने बच्चे हैं! बाबा तुम बच्चों को कितना ऊँच चढ़ाते हैं! पाँव में जो गिरे हुए हैं उन्हों को भी ऊपर चढ़ाय लेते हैं। पाँव में कौन गिर गए नीचे? माताएँ गिर गईं पाँव के नीचे। हर मनुष्य की जो भी स्त्री है वो उसके पाँव की जूती मानी जाती। बाप आ करके उनको अपने सर का ताज बना देते हैं, गंगा का स्थान दे देते- ज्ञान गंगा। तो श्रीमत पर चलना चाहिए और एक की मत पर चलना है। अपनी मत पर चला तो यह मरा। श्रीमत पर चलेंगे तो तुम श्रेष्ठ-ते-श्रेष्ठ मनुष्य अर्थात् देवता बनेंगे। क्षत्रिय तो फिर भी दो कला कम होंगे। क्या? जिनकी कलाएँ कम होती हैं वो पक्के देवता नहीं होते हैं; चौथाई कला भी कम हुई, तो चौथाई कला फेल हो गए। उसको फिर क्षत्रिय की लिस्ट में ही डाला जाएगा। यहाँ है

ही मनुष्य से देवता बनने का। क्षत्रिय नहीं बनना है। बाप पूछते हैं ना- कितने नम्बर में पास होंगे? आबरू रखना। बेहद का बाप भी कहते हैं- सूर्यवंशी बनो। जानते हो विजयमाला 108 की पास हुई है। फॉलो करना है मम्मा-बाबा को।

स्वदर्शन चक्रधारी बना करके, आप समान बना करके फिर शिवबाबा के आगे सौगात ले आते हैं। पहले खुद क्या बनना है? पहले स्वयं बनना है स्वदर्शन चक्रधारी। स्व माना आत्मा, चक्र माना 84 का चक्र और उसको धारण करने वाले। अपनी आत्मा के 84 के चक्र को मन-बुद्धि में धारण करो- हू एम आई? कौन-2 से जन्मों में मुझ आत्मा का क्या पार्ट है- ये पक्का-2 निश्चयात्मक बुद्धि से, बुद्धि में बैठ जाए, तो हुआ स्वदर्शन चक्रधारी। हर आत्मा अपने मनन-चिंतन-मंथन की शक्ति से, अपनी वाचा के आधार पर, अपनी चलन के आधार पर, अपने चेहरे से अपने पार्ट को प्रत्यक्ष करेगी। कोई बापदादा बैठ करके किसी के पार्ट को बोर्ड पर या कागज़ पर लिखेंगे नहीं। तो पहले तो स्वदर्शन चक्रधारी बनें, फिर दूसरों को बनाएँ आप समान और बना करके फिर शिवबाबा के आगे सौगात लेकर आना है। जैसे मंदिरों में जाते हैं तो खाली हाथ नहीं जाते। क्या ले जाते हैं साथ में? कुछ-न-कुछ फूल-पत्र साथ में ले जाएँगे। तो बाबा भी ऐसे फूलों को देख करके बहुत खुश होते हैं। तो बच्चों को श्रीमत पर चलना चाहिए। यहाँ है ही मनुष्य से देवता बनने की मत।

बाबा पूछते हैं- कितनों को आप समान बनाया है? तो बनाया होगा तो जवाब देंगे। फिर बाप ऐसे ही नहीं मानेंगे कि तुमने बता दिया और बाप ने मान लिया। बाप तो क्या देखेंगे? बुद्धिमान लोग भी जो दुनिया के होते हैं, बिना प्रूफ और प्रमाण के कोई बात मानने के लिए तैयार नहीं होते। तो बाप तो बुद्धिमानों की भी बुद्धि है, तुम्हारे कहने मात्र से या चिट्ठी में लिख देने मात्र से नहीं मानेगा कि हमने इतनी सर्विस की, इतने लोग प्रभावित हुए। बाप कहते हैं- प्रभावित किया तो माना प्रजा बना ली अपनी। अपनी प्रजा बना ली; बाप का वारिसदार नहीं बनाया। बनाना क्या है? बाप का वारिसदार बनाना है, बाप को अर्पण करना है, तन-मन-धन, समय, सम्पर्क, सम्बंधों से बाप के प्रति अर्पण कराना है, तो उस आत्मा को प्राप्ति होगी। अपने प्रति सरेण्डर कराय लिया, अपना सिक्का जमाय लिया, अपना प्रभाव उसके ऊपर बैठाय दिया, तो उस आत्मा को बेहद का वर्सा नहीं मिलेगा। सो बाप प्रूफ देखेंगे। कौन-सा प्रूफ? कि जो भी आत्माएँ समझेंगी, उनकी कशिश बाप की ओर हो जावेगी, वो बाप से मिले बगैर रह नहीं सकतीं; इसलिए मुरली में बोला हुआ है कि "कोई कहते हैं हमको दो साल से निश्चय हुआ, हमको एक साल से निश्चय हो गया, तो बाप उनसे पूछते हैं कि तुमको दो साल से निश्चय हुआ और तुम अभी तक बाप से मिले नहीं? जिसको निश्चय पैदा हो जाएगा वो तो एक सेकेण्ड भी मिले बिगर रह नहीं सकता; किराया नहीं होगा तो बिना टिकट भी चल पड़ेगा।" (मु.22.12.73 पृ.2 मध्य) साधु-संत क्या करते हैं? उनके पास किराया होता है? नहीं। तो क्या वो एक स्थान से दूसरे स्थान नहीं पहुँचते हैं क्या? एक गाड़ी से उतार देंगे, दूसरी गाड़ी में चढ़ जाएँगे; दूसरी से उतारा, तीसरी गाड़ी में चढ़ जाएँगे। उनको जो काम करना है, निश्चयात्मक बुद्धि से करेंगे ज़रूर। सो कितनी मज़े की बातें हैं! तुम ही इन बातों को समझ सकते हो, नया कोई बिल्कुल नहीं समझ सकेगा। क्या?

जिन्होंने बेसिक नॉलेज ली है, जिन्होंने ब्राह्मणत्व का पहला जन्म लिया है बेसिक नॉलेज में। ब्राह्मणों के कितने जन्म होते हैं? द्विजन्मा कहा जाता है। तो द्विजन्मा, बेहद के दोनों जन्म होंगे या एक हद का, एक बेहद का होगा? हद का जन्म तो शूद्रों का हो गया, उससे तो कोई कनेक्शन ही नहीं यहाँ। दो जन्म, कौन-2 से? एक तो बेसिक नॉलेज में और दूसरा, एडवांस नॉलेज में। ये दो जन्म होने से पक्का द्विज बनता है, दो बार जन्म लेने वाला। एक माता को पहचानना और फिर बाद में बाप को भी पहचानना। जो द्विज होते हैं, ब्राह्मण बनते हैं पक्के, तो उनको क्या करते हैं? यज्ञोपवीत पहनाते हैं। कहते हैं- जब तक यज्ञोपवीत धारण नहीं किया है तब तक पक्का ब्राह्मण नहीं है। तो कन्धे पर धारण करते हैं

तीन सूत्र। वो तो स्थूल सूत्र धारण कर लेते हैं। यहाँ कौन-से सूत्र धारण करने हैं? ब्रहमा, विष्णु और शंकर- ये सूत्रधारी ज्ञान के तीन सूत्र हैं, जिनको मन-बुद्धि में धारण करे रखने वाला वही पक्का ब्राहमण है। अगर ब्रहमा की पहचान नहीं कि एवर लास्टिंग ब्रहमा कौन-सा, जिसके द्वारा स्वर्ग की बादशाही मिलती है। बाप ब्रहमा के द्वारा स्वर्ग का वर्सा देते हैं, स्वर्ग की स्थापना करते हैं, वो ब्रहमा कौन? ये पूरी पहचान बुद्धि में होनी चाहिए और दूसरा, त्रिमूर्ति में क्या समझाते हैं? शंकर द्वारा विनाश। "मैं विनाश ऐसे से करवाता हूँ जिस पर कोई पाप न लगे।" (मु.29.4.70 पृ.1 मध्य) जैसे उस संस्कृत की गीता में भी क्या लिखा है भक्तों ने कि जो योगनिष्ठा में स्थिर होता है, वो सारे संसार की भी हत्या कर दे तो भी उस पर कोई पाप नहीं चढ़ता। तो ऐसी स्टेज बनी हुई हो याद की। वो हुआ शंकर का पार्टधारी, जो स्वयं कर्मेंद्रियों से कुछ नहीं करता, वाचा से कोई भाषण नहीं देता; अगर बोलता भी है तो उसमें ब्रहमा की सोल चंद्रमा के रूप में बोलती है मस्तक में प्रवेश कर अथवा तो ज्ञान-सूर्य शिव तीसरे नेत्र के रूप में प्रवेश करके बोलता है। शंकर के चित्रों में उनको कभी भाषण देते हुए नहीं दिखाया जाता। शंकर क्या करता है? कुछ भी नहीं। एक मुरली में क्या बोला? "शंकर क्या करता है? कुछ भी नहीं।" (मु.29.5.85 पृ.2 आदि) क्या बोला बालकराम? ज़ोर से बोलो। कुछ बोल रहा है। शंकर क्या करता है? कुछ भी नहीं। तो ऐसे मुरलियों में क्यों बोला? कि वो कर्मेंद्रियों से कोई काम नहीं करता है; वो तो याद में बैठा हुआ दिखाया जाता है और याद कोई काम नहीं है, कोई पार्ट नहीं है। रंगमंच पर यह कोई पार्ट हुआ क्या कि याद में बैठ गए? पार्ट तो कर्मेंद्रियों से बजाया जाता है। इसलिए पार्ट बजाने वाली आत्माएँ तो दूसरी हैं उसके अंदर, वो स्वयं कोई पार्ट बजाने वाला वास्तव में नहीं है; इसलिए कहा है कि शंकर क्या करता है? कुछ भी नहीं। वो तो याद करता है। तो याद करना तो सबसे बड़ी बात है। याद से विश्व की बादशाही मिलती है, तो फिर क्या नहीं मिल सकता! तो योगबल से विश्व की बादशाही ली है। योगबल से वो सारे संसार का विनाश कराने के निमित्त बना बैठा है और स्वयं भी विनाश नहीं करता। क्या? स्वयं विनाश नहीं करता, किसके द्वारा कराता है? शक्तियाँ गाई हुई हैं असुर संहारिणी, शक्तियों को आगे करता है।

तो तुम बच्चे जानते हो कि श्रीमत पर चलेंगे, आप समान बनाएँगे तो ऊँच पद पाएँगे। यह मनुष्य से देवता बनने की कॉलेज है। कैसी कॉलेज है? मनुष्य से देवता बनाने की कॉलेज। कोई कहे कि इस जन्म में पढ़ाई पढ़ो और अगले जन्म में तुम डॉक्टर, मास्टर, वकील बन जाना, तो कोई पढ़ेगा? कोई नहीं पढ़ेगा। ये कॉलेज है मनुष्य से देवता बनने की। तो ज़रूर पढ़ाई पूरी होने के बाद, परीक्षा पूरी होने के बाद, रिज़ल्ट आने के बाद वो मर्तबा भी मिलना चाहिए- क्या? मनुष्य से देवता। इसी जन्म में मिलना चाहिए/अगले जन्म में? इसी जन्म में मिलना चाहिए। वो देवताएँ यहीं प्रत्यक्ष होंगे।

कोई को तो 7 रोज़ में ही बहुत अच्छा रंग चढ़ जाता है, कोई को तो बिल्कुल नहीं चढ़ता है। कि ईंटों का भट्ठा लगता है ना! तो यहाँ भी सात रोज़ की भट्ठी है। मोस्टली ईंटें तो अच्छी पक जाती हैं; लेकिन कोई-2 तो बिल्कुल खंजर ही हो जातीं; कोई कच्ची रह जाती हैं, तो कोई को बहुत अच्छा रंग चढ़ जाता है। (किसी ने कुछ कहा-...); लेकिन वो सिमेंट नहीं पकड़ता माना जो स्नेह का गारा है ना, वो नहीं पकड़ता। जब स्नेह का गारा ही ईंट नहीं पकड़ेगी तो संगठन रूपी महल क्या बनेगा? वो तो बहुत बेकार ईंट है, चोर-चकार उस ईंट को आराम से निकाल लेंगे। तो ये मनुष्य से देवता बनने की कॉलेज है। छी-2 कपड़े पर बड़ा मुश्किल से रंग चढ़ता है, बहुत मेहनत करनी पड़ती है। कपड़ा माना? शरीर रूपी वस्त्र।

पहली-2 बात बच्चों को समझाई कि पहले सबको बोलो- बेहद के बाप को तुम जानते हो? वो तथाकथित ब्राहमण क्या कहेंगे? वो तो कहेंगे- हाँ, हम जानते हैं, क्या है। उसका नाम-रूप क्या है? वो कहेंगे- बिंदुरूप। अरे! बिंदु तो कीड़े-मकोड़े, पशु-पक्षी ये सारे ही बिंदु हैं। हमारी आत्मा, तुम्हारी आत्मा, सबकी आत्मा क्या है? बिंदु है। कैसे पता चलेगा कि

उन बिंदुओं में परमपिता परमात्मा बिंदु कौन-सा है? कहेंगे- सबसे ऊपर वाला। तो सबसे ऊपर वाले तक बुद्धि की पहुँच है कि बुद्धि इस देह और देह की दुनियाँ में ही रमण करती रहती है? उस बिंदु की पहचान चाहिए। पहचान कब होगी? पार्ट के द्वारा। परमात्मा के जो अनेक प्रकार के नाम हैं, वो किस आधार पर बने? काम के आधार पर। तो काम शरीर के द्वारा किया होगा या बिंदु ने फुदुक-2 मचाई होगी? बिंदु थोड़े ही पार्ट बजाएगा रंगमंच पर आ करके, शरीर रूपी वस्त्र ज़रूर चाहिए। परमात्मा आ करके जो पार्ट बजाता है, वो इतना विशाल पार्ट है, जो शालिग्रामों का पार्ट नहीं हो सकता; इसलिए शिवलिंग को बड़ा बनाते हैं और शालिग्रामों को छोटा बनाते हैं। नहीं तो आत्माएँ-2 तो सभी ज्योतिबिंदु हैं। तो शिवलिंग जो है, वो बड़ा आकार है शरीर की यादगार और उसमें जो बिंदु है, वो है परमपिता परमात्मा सुप्रीम सोल शिव की प्रवेशता की यादगार, दोनों की प्रवृत्ति है। आत्मा और शरीर की प्रवृत्ति के बगैर कुछ नहीं हो सकता। आत्मा शरीर के बगैर कुछ नहीं कर सकती और शरीर आत्मा के बगैर कुछ नहीं कर सकता। तो कहते हैं- मेरे में भी परमात्मा है, तेरे में भी परमात्मा है, परमात्मा तो सर्वव्यापी है। एकव्यापी को सर्वव्यापी बनाए देते हैं। कौन बनाए देते हैं? शूटिंग कौन करते हैं? ब्राह्मणों की संगमयुगी दुनियाँ में ही शूटिंग कर देते हैं कि परमात्मा तो सर्वव्यापी है। कंकड़ बुद्धियों में, पत्थर बुद्धियों में, भीत माना दिवाल की तरह ज्ञानमार्ग में रोड़े बनकर अटक जाएँ, ऐसे भित्तर बुद्धियों में, कण-2 जैसी नाचीज़ आत्माओं में भी परमात्मा को व्यापक मानते हैं। सीढ़ी के चित्र में देखो, मनुष्य, मनुष्य की पूजा कर रहा है। उस गुरू बिचारे को गद्दी भी नहीं मिली है, उसको भी भगवान समझ करके बैठ जाते हैं। टीचर की बात नहीं मानेंगे, सुप्रीम टीचर को तो जानेंगे ही नहीं, बस उनको जो ज्ञान में खींचकर गुरू लाए, बस उसी को वो भगवान समझ बैठ जाते हैं। तो नाचीज़ कण-2 जैसी आत्माओं को भी भगवान समझ करके बैठ जाते हैं। परमात्मा कहते हैं- मैं सर्वव्यापी नहीं हूँ; मैं तो एकव्यापी बन करके आता हूँ, एक स्वरूप के द्वारा संसार में परमात्म-पार्ट बजाता हूँ। अरे! तेरे में भी है, फिर तो पूछने की बात ही नहीं। कहते हो, बाप है तो फिर बाप तेरे में अथवा मेरे में कैसे हो सकता? बाप अलग होता है, बच्चा अलग होता है। बाप है तो बाप से वर्सा ज़रूर मिलना चाहिए। बच्चों को बच्चों से वर्सा मिलेगा क्या? वर्सा तो बाप से मिलता है, रचयिता से मिलता है। तो पहले-2 अलफ को समझाओ। क्या? (ओमशांति)